ऋतुरंजन

ऋतुरंजन

कवयित्री
डॉ. आभा पूर्वे

हिन्दी रूपान्तर
डॉ. अमरेन्द्र

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.९५७१७२.८.६

प्रथम संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखिकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ रूपये मात्र

Rituranjan (Poems) By Dr.Abha Purbey
Translation Dr.Amrendra Rs.100/-

भाषाविद् आरो कवि
डॉ. डोमन साहु समीर
के स्मृति में

—आभा पूर्वे

आपनों बात

जानै छियै, फेनु वहा शिकायत ऐतै कि संग्रह में कुछ आरो छंद होतियै, तें अच्छा।

हमरो मोंन करै छेलै कि एक-एक छंद कें एक-एक गीत के रूप दै दियै, मतर सुक्ति के काव्य के अपनों महत्व होय छै। जों आरो ऋतुगीत रचतियै, तें दुहरैवे नी करतियै, एक्के बातों कें घुमाय-फिराय कें लिखतियै।

बस यही नै होलै।

होना कें भविष्य की करैतै, के कहें पारें!

—आभा पूर्वे

सावन पूर्णिमा
(३० अगस्त २०२३)

शरतचंद पथ
मशाकचक, भागलपुर
८१२००१ बिहार

ऋतु-क्रम

अंगिका

वसंत	११
ग्रीष्म	१४
वर्षा	२२
शरत	२८
हेमंत	३१
शिशिर	३३

हिन्दी

वसंत	३७
ग्रीष्म	४०
वर्षा	४८
शरत	५४
हेमंत	५७
शिशिर	५९

प्रकृति आरो काव्य-सौन्दर्य केरों व्रज्या

—डॉ. अमरेन्द्र

चौमासा के आखरी मास यानी कुआँर के महीना। ई आसिन मास भले सौन-भादोवाला मेघों सें भरलों-पुरलों नै रहें, मजकि जे मेघ दिखावै छै, ऊ बड़ी साफ आरो निर्मल, सेवाती नक्षत्र के मेघ नाँखीं निर्मल-सुखदायी। अंगिका में षट्ऋतु-वर्णन के मेघ कभियो आदरा के मेघ नाँखी बरसलों छेलै, ऊ रुकलै नै, समय लै-लैकें सौन-भादो के बरखा-रं बरसतें रहलै। चंद्रप्रकाश जगप्रिय, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, कैलाश झा किंकर, डॉ. जटाधर दुबे के षट्ऋतु-वर्णन अंगिका काव्य रों अनमोल संपत्ति छेकै। आबें वही कड़ी में डॉ. आभा पूर्वे के ई षट्ऋतु संकलन—'ऋतुरंजन'।

निकली तें गेलों होतियै ई व्रज्या कब्बे मतर, कोय कारणे रुकले रहलै । रुकै के तें कभियो-कभियो सौनों-भादों के पुरबा-पछियो तांय घन्नों मेघ के बरसै में भांगटों लगाय दै छै। जे हुएँ, सेवाती नक्षत्र के मेघ कोय माने में कम नै होय छै, मोती-कपूर तांय यहां स्वाति-मेघ के कारणे तें चमकै छै, गमकै छै।

डॉ. आभा पूर्वे के ई लघु मुक्तक-संग्रह में अलंकार आरो छंद के चमक छै, तें सकुमार भाव के सुगंध भी।

मात्र सैंतीस मुक्तक के ई संग्रह भले एकरा देह सें भारी नै बनैतें रहे, मतर शब्दाश्रित आरो अर्थाश्रित अलंकार के कारण संग्रह के सब्भे मुक्तक में जे विशिष्ट कांति प्रकट छै, वही ई व्रज्या (एक भाव के मुक्तक-संग्रह) कें श्रेष्ठ बनाय देलें छै आरो यै सब में कवयित्री के कल्पना शक्ति ही सक्रिय छै। कल्पनाहै के कारण यहाँ किसिम-किसिम के बिम्ब पनसोखा रं मोहै छै ।

यहाँ प्रकृति के कोइयो रूप रहें, कल्पना ओकरों रंजन में जरूर लगलों दिखै छै आरो यहा कल्पना-प्रतिभाहै के बल्लों पर कवयित्री खाली भावे में चमक नै भरलें छै, बलुक प्रकृति के रूप-विन्यास भी मोहक दीप्ति

सें भरी देलें छै। प्रकृति पर मानवीय चेतना रों आरोपण कल्पना के ही तें कौशल छेकै :

खप्पड़ में आगिन कें लैकें
उछलै-कूदै छै बैशाख
छिटलें जाय छै छप्पर-छत पर
आगिन आरो करिया राख
आकुल-व्याकुल देखी जग कें
आरो भी ऊ उमतावै छै
घोर मशानी के मंतर कें
चुटकी दै-दै गावै छै
गाँव-गली सब कोण्टा-बारी
बनलों छै जगलों श्मशान
नुकी गेलों छै स्वर्गों में जाय
धरती केरों ही भगवान!

प्रकृति के भावात्मक रमणीयता के सुरक्षा लेली कवयित्री के प्रतिभा जत्तें क्रियाशील मिलै छै, ओत्है काव्य के काया लेली भी। द्विपदी मुक्तक काव्य सें लैकें सोलहपदी तक के मुक्तक-विधान 'ऋतुरंजन' के एक अलग विशिष्ट कलापक्ष छेकै, जेकरा पर स्वतंत्र रूप सें विचार करै के जरूरत रहतै। छंद के बंधन सें मुक्त होयकें प्रकृति के रूप-रंजन बेसी आसान छै, जों कवि के पास कल्पना के प्रतिभा छै, आरो जे चंद्रप्रकाश जगप्रिय के काव्य 'ऋतुरूप' में मिलै भी छै, मतर छंद के अनुशासन में रही कें वस्तु आरो आत्म के सौन्दर्य-विधान सहज नै छै, जे काम कवयित्री डॉ. आभा पूर्वे नें 'ऋतुरंजन' में करी दिखैलें छै।

—संपादक/आंगी
लाल खां दरगाह लेन, सराय
भागलपुर—८१२००२ (बिहार)
मो. न. ०९९३९४५१३२३
०८३४०६५०६७९

बात ही अलग

भले माघ में शाल-दुशाला
वैसें खुब्बे बढ़िया फागुन
फागुन केरों फगुनाहट सें
बढ़ी कें लागै बेसी, गुनगुन
गुनगुन सें भी बढ़िया लागै
अमराई में कोयल-बोलीं
ओकरो सें भी बढ़िया लागै
कमल फूल का डोला-डोली
ओकरौ से भी अच्छा लागै
पीऊ-पीऊ पपीहा रों बोली
जे फागुन मधुमास कहावै
भला कना नै मोंन सुहावै!

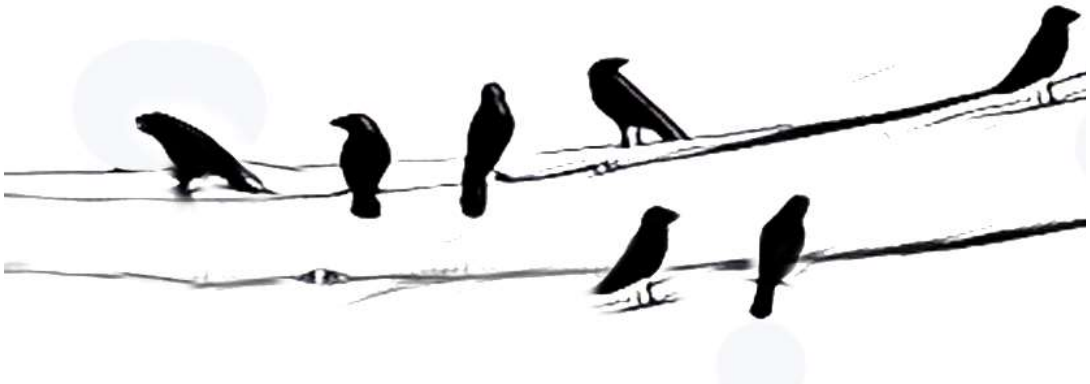

फागुन के रास

ऐथै फागुन मास के, की सुगंध के जोर,
चंदन-रं खुशबू करै—रक्त, घाम, हर पोर।

2

अद्भुत रूप पलाश के, सुग्गे केरों लोल
टें-टें करी बोलै अभी, शायत ई जी खोल।

3

फागुन के इंजोरिया : फणिधर— ई तें चेत
कमल-नाल पर अहि रहें, सोचिये साँस अचेत।

वसंत रौं बारात

कोयल कुहकै छै कहाँ, ई टेसू के टीस,
पाहुन छै परदेस में, ओकरे लें ई रीस।

2

कोयल केरों हूक सें टहकै मन के टीस,
जों एक्के सें है असर, की होतै, जो बीस!

3

चैतारों बहलै हवा, खिललै फूल पलाश,
फूल-फूल पर, डार पर, तितली, कोयल-वास।

ग्रीष्म

की ऐलों बैशाख छै, नद्दी लगै सपाट,
खाली रेते-रेत छै, नै तें चुआँड़ी-घाट।

2

आसों में आखार के मरुवैलों सब भाव,
कुइयाँ-पोखर ठो लगै, कोय सुरंग, कोय नाव।

3

आँबाँ पर कलशो लगै, तपलों ठो भगवान,
ई रं तपलो जेठ छै, जंगल तक हलकान।

4

जेठ बहै आगिन घरी, लुत्ती गिरलों जाय,
की पोखर-नद्दी भला, गाँगो तक कुम्हलाय।

5

दिन राकस-रं घाम के, रात विजन-रं गाँव,
धिपलों-धिपलों रात-दिन, छाँहो कें नै छाँह!

6

आमों के रस-गंध सें रौदो रहै अघाय,
वहीं केतकी लागले जोगी-रं मुरकाय!

गुस्सा में ग्रीष्म

कौनें आग लगाय गेलों छै सौंसे धरती में,
पागल होय पानी सें लैकें पत्थल-परती में—
चकमक चिन्गारी चौंधियावै आगू पसरी कें
देहों पर पसरी-पसरी जाय मुँह सें ससरी कें
सती बनाय कें छोड़ी देतै ई जेठों के आग
गुस्सैलों फुँफकारै सब पर खरियैलों ठो नाग।

2

हरा-हरा पीरों दिखै, कलरव होलै काँव,
जेठों में लुत्ती गिरै, छप्पर-छप्पर, गाँव।

बेमत जेठ

लाल-लाल लोहों-रं जेठो
जेन्हों सरँग ठो, होने हेटो
की गरीब; जों बेकल सेठो!

मार जेठ के बैशाखों पर
खेतों, बहियारी, शाखों पर
एक्के-रं दुख--सौ-लाखों पर।

झुलसी गेलै देह-लता ठो
मेघदूत के सरस कथा ठो
हेने जेठ छै उमतैलों ठो।

बेमत वैशाख

ई बैशाखों के सूरज के चेहरा कैन्हों लाल
प्रेत छिकै, की भूत-पिशाचे या नांगटों वैताल
लगै उघाड़ी कें ही रहतै ई बरगद रों छाल
जरी गेलै सब नद्दी-पोखर, जे रं वन रों हाल
पैगलैलों रं दौड़लों आवै सब्भे के दिस काल।

दीमक सें दूर मल्हार

जे रं सरँग जरै छै अबकी
कुँइयों तांय भी ऐठी जैतै
जोॅर-जनानी कना नहैतै
हेना में की पाहुन ऐतै
रातो उसनै, की सुख पैतै
लागै नै छै आग पझैतै
जेठ हेन्हैं जों दीपक गैतै
लगै मल्हार नै देह भिंजैतै
प्राण लगै छै लइये जैतै
धरती-सरँग गेलोॅ छै लहकी!

बेमत वैशाख (२)

खप्पड़ में आगिन कें लैकें
उछलै-कूदै छै बैशाख
छिटलें जाय छै छप्पर-छत पर
आगिन आरो करिया राख।
आकुल-व्याकुल देखी जग कें
आरो भी ऊ उमतावै छै
घोर मशानी के मंतर कें
चुटकी दै-दै गावै छै।
गाँव-गली सब कोण्टा-बारी
बनलों छै जगलों श्मशान
नुकी गेलों छै स्वर्गों में जाय
धरती के भगवान!

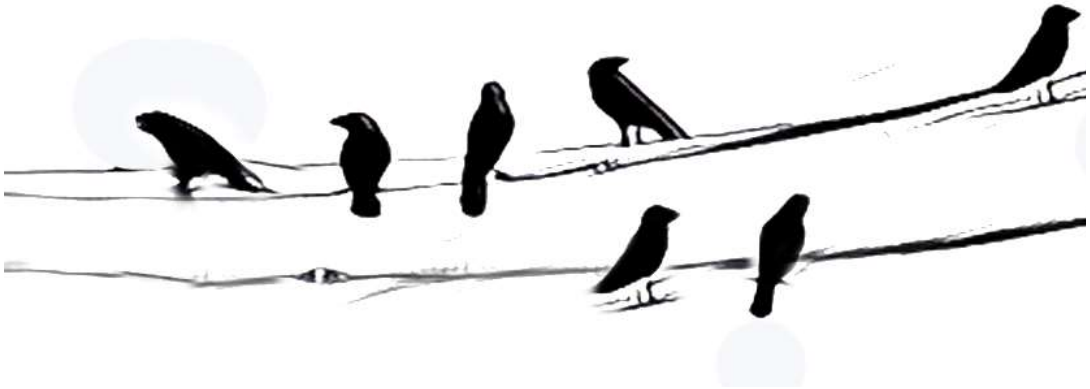

कसाय भेलै घाम

कटियो टा टसकै नै घाम छै
की कहियै, केकरा आराम छै!
पाँचो प्राण सुखलों छै, देह जरै
चक्रो कें साधै छी, नेह जरै!
हेनों ई घामों में चंदन भी पत्थल
नद्दी पराँट लगै; कादो आ दलदल।

घाम भेलै मिट्ठों

अभी अभी घोली गेलों छै
जीहा पर रस कें,
हेनेनी आमें-लीची नें
जे नै टसकें,
मीट्ठों-मीट्ठों जामुन तक भी
माँत लगै छै
की मिसरी खजूर कें
सबके खांत लगै छै ।

वर्षा

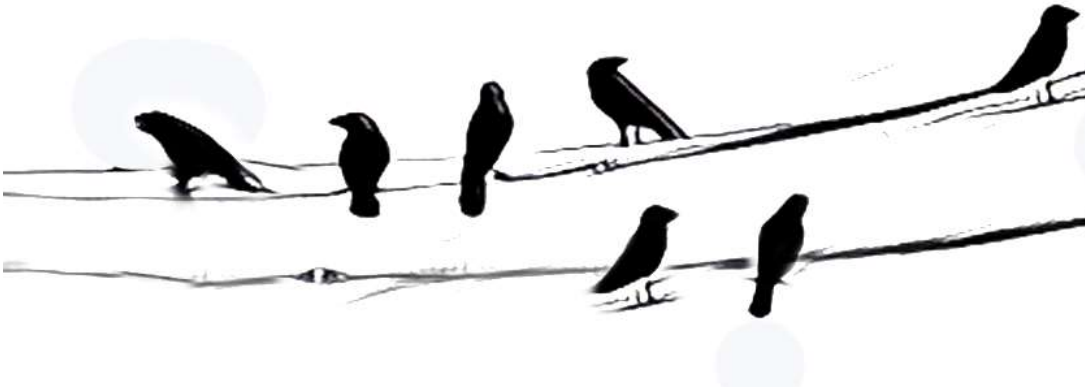

छटका छटकै छै, जना, नागिन उल्टा होय
सुल्टै लें छटपट करै, घर में काँपै कोय।

2

ठनका ठनकै जे किसिम, धरती तांय भयभीत,
हमरों मन की-की गुनी, गावै मन-मन गीत।

ढलमल मेघ

ढलमल-ढलमल मेघ सिलोटी
देखतें-देखतें ही कजरोटी
आय सरँग में के खेलै छै
बिजली केरों अट्ठा-गोटी!

गुजगुज रात अन्हरिया दिन में
ई केन्हों कारिख आगिन में
हाथी चिघड़ै, अरना गरजै
सौनो शायत कटतै रिन में।

मेघ झमाझम झर-झर बरसै
हेने कि धरती नै तरसै
शाम नै ऐलै, रात की ऐतियै
विरहिन केरों दुख की जैतियै
लगै झकासों--झरक बहै छै
जे पत्थल छै, वहीं सहै छै।

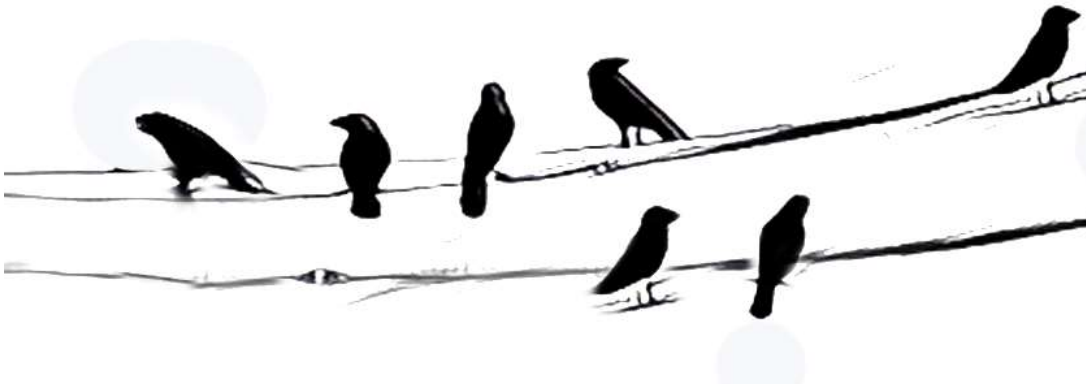

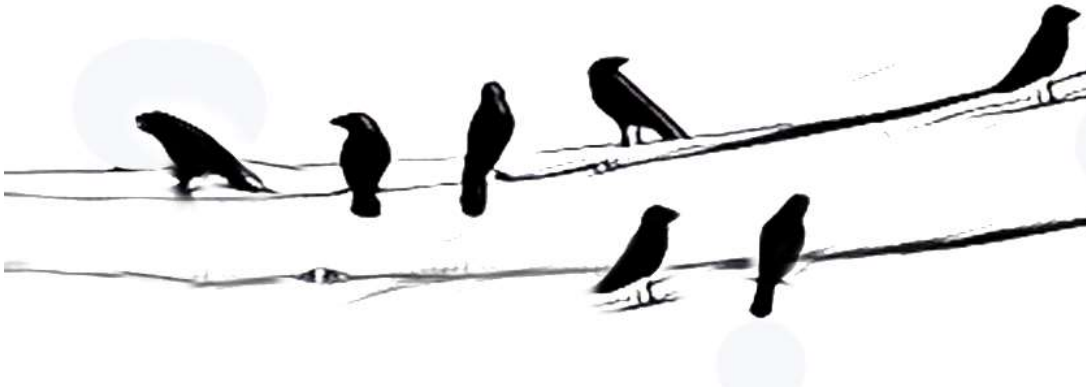

साँवली अदरा

त्तित्तिर केरों पंखो-रं की उमड़ै बदरा
जेठों के जैथैं आ ऐथैं करिया अदरा
ई पानी में पानी रहतै केकरों-केकरों
पत्थल हेनों काठ करेजों ठो छै जेकरों
बिजली की छटकै छै -- लागै साटों मारै
चुनी-चुनी कें विरहिन के बस घोंर उजारै
राधा छै असकल्ली घर में, काँपी जाय छै
कत्तो रहै सचेत मतरकि चमकी जाय छै।

उधियैलौं बदरा

खमखम भूत-पिशाचे नाँखी बदरा झमझम
छप्पर पर बूंदो के गिरवों -- लागै धम-धम
करिया रातों में बोलै नै झिंगुर तक छै
प्राण कहीं नै निकलै हमरों, एकरे शक छै
जे रं चमकै चिनगारी लै घूमै ठनका
दोहरैतै की वही प्रलय के कथा पुरनका!

बादल-बिजली

हिन्नें घुमड़ै, हुन्नें छटकै बिजुरी घन में
आखिर की उठलो छै हेनों ओकरों मन में
नाचै छै नटुआ-रं कंधा-कमर कसी कें
जान गँवैतै बिजली तारों पर सें खसी कें
एक दिशा में पनसोखा छै पिछुवाड़ी में
टाँकी गेलों छै सुइया सें कोय साड़ी में।

हेने ई बरसात

कुदकै छै
फुदकै छै
ऐंगना के पानी में
केन्हों तें मस्त होय बेंग सिनी!
एक्के रट—
टर्र-टों, टर्र-टों!
ई देखी मेघो ठो
गरजै छै, गड़गड़-गड़
गड़गड़-गड़!
काँपी जाय धरती तक
की होतै, सोची
करेजों धक्!

शरत

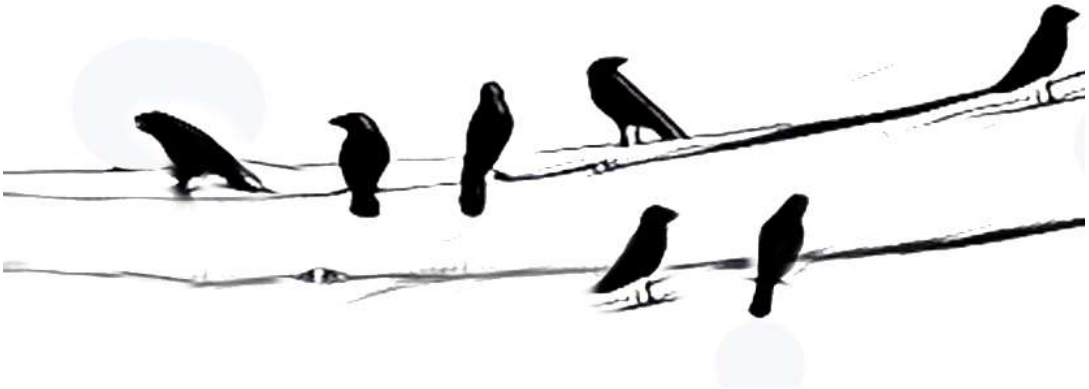

मेघ दुकूल

ऐना नाँखी झलमल-झलमल
नद्दी आरो पोखर
पूजा केरों आसन धोलों
माँटी आरो पत्थर।
पाट-पितंबर नाँखी सरँगो
नै गरमी, नै शीत
ई दिन केरों दरस-परस तें
प्रीतम केरों प्रीत!
मोंन बान्है लें बोली रहलै
छै कासों के फूल
उड़लों जाय मन, जों सरंग में
मेघो जकां दुकूल!

सारंगी सुर : शरत

बोलै छै टिटही, सारस, तें हंसो बोलै;
की सितार, दोलक, मृदंग पर बंशी बोलै?
नद्दी सें लै कें जंगल तांय नाद-नाद छै,
की नवतुरिया के बीचों में कुछ समाद छै?
कै-कै सुर में सारंगी के बोल लगै छै
सातो सुर के एक्के सुर में घोल लगै छै।

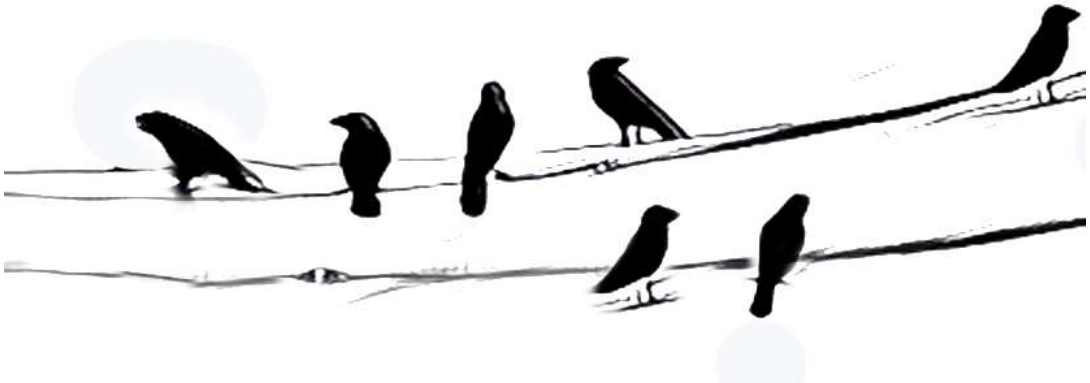

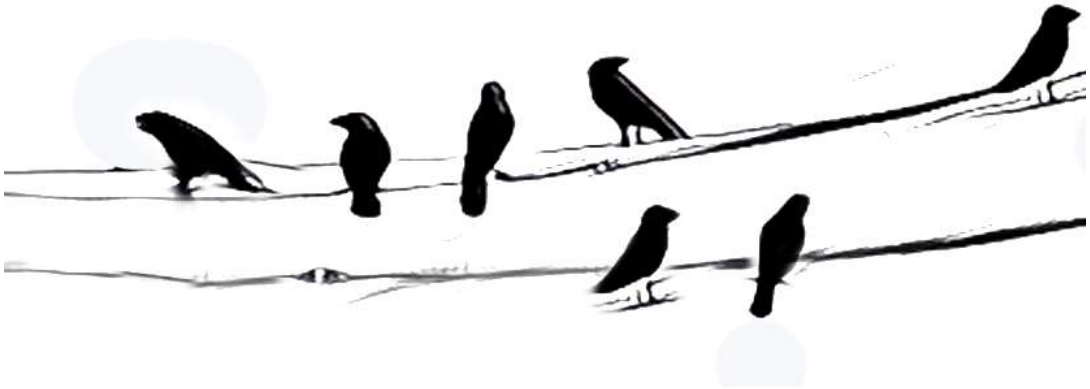

शरत लगै सुहागिन

हाँक सुनी कें शरत सखी के
हँसलै हरसिंगार,
मौलसरी पर उमड़ी ऐलै
चंपा केरों प्यार।

पर अपनै में मस्त कमल छै
मस्त जना छै कास,
कहाँ मालती के भी सुध-बुध
भौरा केकरों पास।

कल तें शरत कुंआरी छेलै
आय ऊ लगै सुहागिन,
केकरों घर हेमंत बसै छै
केकरों घर में आगिन!

हेमंत

सरसों हेनों दिन

सरसों रों तन, सरसों रों मन
सरसों हेनों दिन,
है हेमंत के नाम होतियै
सरसों! नै आसिन।

साफ-सुफैय्यत धोलों धरती
हरा लगै छै खेत
जहाँ-तहाँ खिललों कासों के
झुकी गेलों छै बेंत।

नद्दी इस्थिर, पोखर इस्थिर
कलको चंचल–शांत
केकरों हाँक सुनी कें लौटी
चललों आवै कांत!

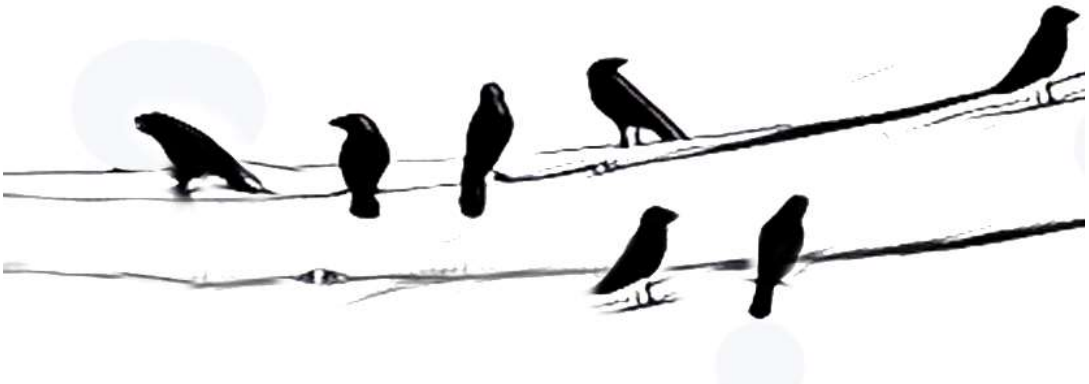

शिशिर रौं साथी

कोयल भी शांत होलै
कूक नै सुनावै आबेॅ
भले हौले-हौले शीत
देह सिहरावे आबेॅ
आवी चल्लै शिशिर छै
बाते ई कँपावै आबेॅ
भले सरसों के फूल
फूली के लुभावे आबेॅ!

शिशिर

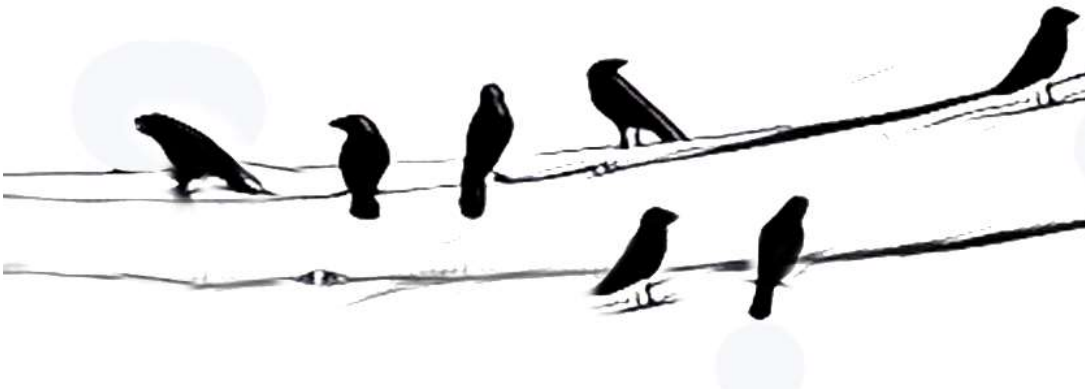

रात भेलै सुरसा

झुकी गेलै सरसों छै
फूल नै हौ पात ही
आबें नै हेमंत केरो
कूक, होनों रात ही!
रात भेलै सुरसा छै
करै बस घात ही
नै तें सुरजों के साथ
नै तें साथी साथ ही।

ठिठुरै शिशिर

नदी नै सुहावै आबें
नै पोखर-पानिये
साँढ़े रं शिशिर भेलै
ढूँसै केन्हों हानिये
सूरजो गुलेल मारै
बरफों के तानिये
आग या रजाई बिना
पूरा की कहानिये!

माघों के धूप

माघों के पहरा में
शितलहरी नाँचै छै—नंग-धड़ंग;
हुलकै छै
सरंगों सें
डरलों सुरुज
जे कि गिरावै छै
धूपों के रेशमी पटोरी!

कन्नें गिराना छै
कन्नें गिरावै छै,
कन्नें उड़ियैलों नी जाय!

शिशिर रौं ठट्ठा

जिनगी केरों घोंर निराशा—
घोर कुहासा;
कहाँ नुकैलों छै सुख-सूरज ?
कैठां वासा?
प्राणो के नै चहल-पहल छै—
चुप्पी केरों सट्टा;
कोय रजाई, कोय बोरसी लै—
निर्गुण केरों ठट्ठा!

हिन्दी अनुवाद

वसंत

बात ही अलग

भले माघ में शाल-दुशाला
वैसे इससे बढ़िया फागुन
फागुन की इस फगुनाहट से
और भी बढ़कर भाए गुनगुन
गुनगुन से भी बढ़कर भाए
अमराई में कोयल-बोली
इससे भी बढ़कर बढ़िया तो
कमल पुष्प का डोला-डोली
इससे भी कुछ आगे बढ़कर
पीऊ-पीऊ पपीहे की बोली
जो फागुन मधुमास कहाए
कैसे न वह मन को भाए!

फागुन का रास

आते फागुन मास के है सुगंध का जोर,
चन्दन की खुशबू करे रक्त, स्वेद, हर पोर!

2

अद्भुत रूप पलाश का सुग्गे का हो लोल,
टें-टें कर बोले अभी, शायद यह जी खोल!

3

फागुन की इंजोरिया, मणिधर — यह तो चेत,
कमल-नाल पर अहि समझ, साँसें हुई अचेत।

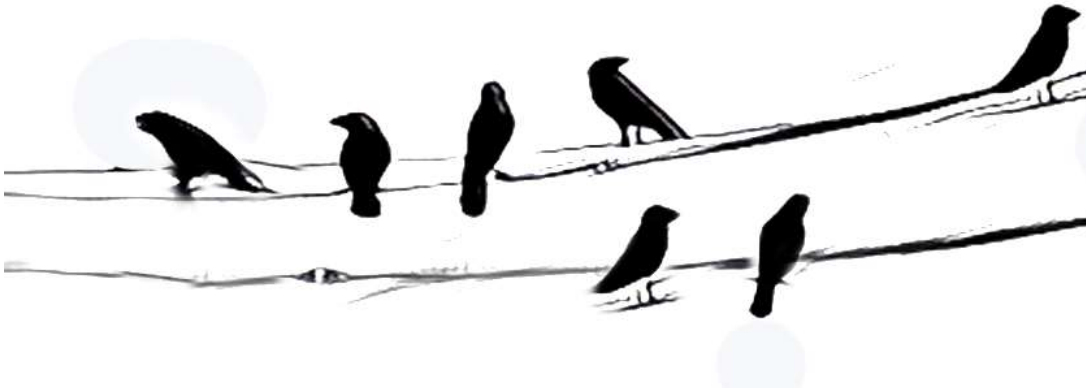

वसंत की बारात

कोयल की यह कूक क्या? यह टेसू की टीस,
पाहुन है परदेस में, इसीलिए यह रीस।

2

कोयल की इस कूक से टहके मन की टीस,
अगर एक का यह असर, क्या होगा, जो बीस?

3

बही चैत की जो हवा, लहके फूल पलाश,
फूल-फूल पर, डाल पर, तितली, कोयल-वास!

ग्रीष्म

ऐसा यह वैशाख है, सरिता लगे सपाट,
सिर्फ रेत-ही-रेत है, नहीं चुआँड़ी-घाट।

2

आर्द्रा की आशा लिए मरुआए सब भाव,
कुआँ-सरोवर तक लगे ज्यों सुरंग, ज्यों नाव।

3

आँवाँ पर हो ज्यों कलश, ऐसा ही दिनमान
जेठ तपा है इस तरह, जंगल तक हलकान।

4

जेठ चला आगिन लिए, लुत्ती की बरसात,
पोखर-सरिता, गंग पर क्रूर ग्रीष्म के घात।

5

ग्रीष्म-दिवस राकस लगे, रात विजन-सा गाँव,
तपे-तपे से रात-दिन, छाँहों को न छाँह!

6

पके आम-रस-गंध से अघा रहा है ताप,
वहीं केतकी यूँ हँसे, योगी का संलाप।

गुस्से में ग्रीष्म

किसने आग लगाई है यह पूरी बस्ती में,
बेमति-सा ही, जल से लेकर पर्वत-परती में ?
चिंगारी चौंधियाती आँखें आगे पसर-पसर कर;
अंग-अंग पर पसरी जाती, मुँह से ससर-ससर कर!
सती बनाकर ही छोड़ेगी भरे जेठ की आग
गुस्से में फुँफकारे सब पर खरिमाया-सा नाग!

2

हरा रंग पीला दिखे, कलरव अब तो काँव,
आग झरे इस जेठ में—छप्पर-छप्पर, गाँव!

लोहित जेठ

लोहित-लाल दिखाता जेठ,
जैसा नभ, वैसा ही हेट;
क्या गरीब ही? बेकल सेठ!

जेठ-मार स्वजन आँखों पर,
खेतों, बहियारों, शाखों पर;
इक-सा ही दुख सौ-लाखों पर।

झुलस गई है देह-लता ही,
मेघदूत की सरस कथा ही;
ऐसा बेमत जेठ हुआ है!

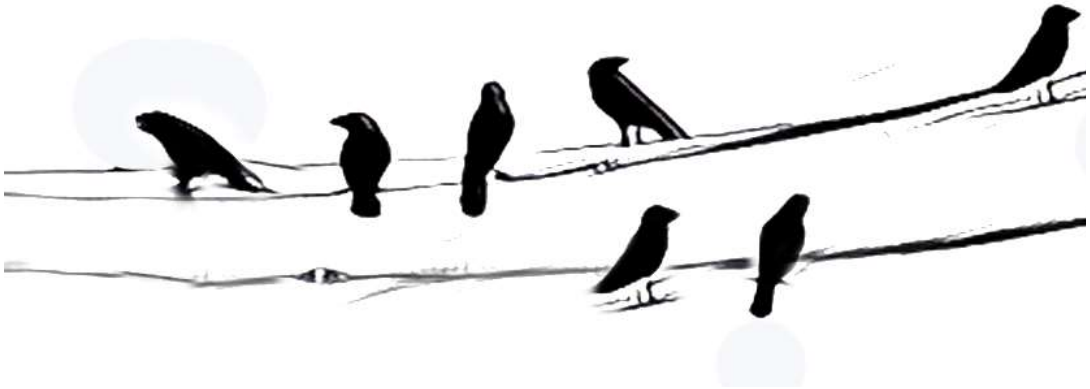

पगलाया वैशाख

इस वैशाख के सूरज का है चेहरा कितना लाल,
प्रेत, भूत है या पिशाच ही, या नंगा बैताल ?
लगता यही, छील रख देगा बरगद की भी छाल,
जले हुये सब नद्दी-पोखर, जैसा वन का हाल।
पगलाया-सा दौड़ा आता सब पर ही यह काल!

दीपक से दूर मल्हार

ऐसा लोहित गगन कब हुआ!
गहरे कुएं भी सूखे-सूखे,
कहाँ नहाए बहुएं, कैसे ?
आयेंगे पाहुन क्या ऐसे!
रैन अनल जब, क्या सुख पाए,
विधि जाने यह दुख कब जाए;
दीपक ऐसा जेठ भी जो गाए
तब मल्हार क्या देह भिगाए
जेठ जायेगा प्राणों को ले,
लोहित भू-नभ चुप-चुप बोले।

बेमत बैशाख

आग लिए अपने खप्पड़ में
धींगा-मस्ती में बैशाख,
छींट रहा है घर-छप्पर पर
खूब दहकती आगिनराख।

आकुल-व्याकुल जग है इससे
पर बैशाख मगन है,
मंत्र मसानी को गाने मे
कैसी लगी लगन है!

गाँव-गली सब कोण्टा- बारी
बने हुये श्मशान,
कहीं स्वर्ग में जा बैठे हैं
धरती के भगवान!

वधिक ग्रीष्म

जैसे का तैसा ही आग बना घाम,
क्या बोलूं, किसको आराम है!
पाँचो प्राण सूखे-से, देह जले,
चक्रों को साध रही, नेह जले;
ऐसे इस ताप में चंदन तक पत्थल,
सरिता पराँट लगे, कीचड़ या दलदल!

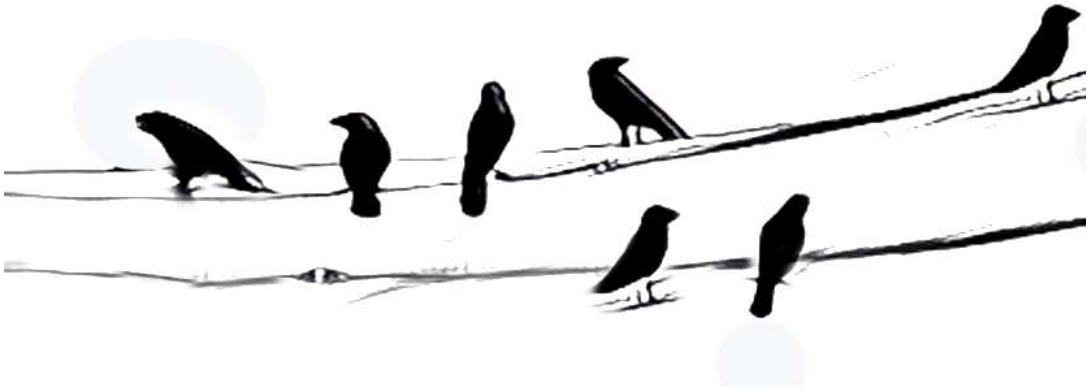

रस ऋतु ग्रीष्म

अभी-अभी ही घोल गया है -
जी पर रस को,
अंब और लीची ने मिलकर
ऐसा कुछ तो ;
मीठे-मीठे जामुन तक भी
माँत खा रहे,
आगे बढ़ मिसरी खजूर तक
डाह करे!

वर्षा

बिजली चमके इस तरह, उलटा हुआ ज्यों नाग,
तड़पे : सीधा हो सके; घर में कहीं विहाग।

2

ठनका ठनके जिस तरह, धरती है भयभीत,
मन भी क्या-क्या सोचकर, गाता मन-मन गीत।

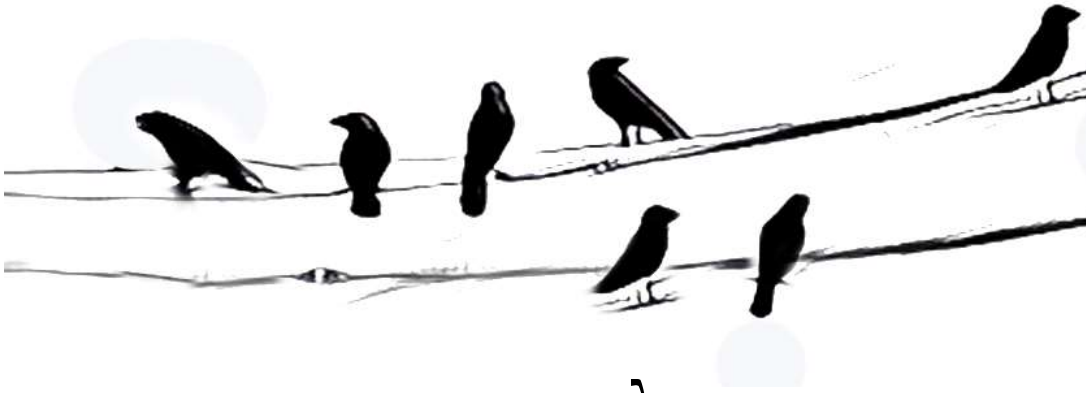

ढलमल मेघ

ढलमल-ढलमल मेघ सिलोटी
पल में ही; जैसे, कजरोटी
खेल रहा है कौन गगन पर
बिजली की यह अट्ठागोटी!

दिन में ही यह रात अंधेरी
यह कैसी कालिख आगिन में
हाथी चिघड़े, अरना गरजे
सावन लगे कटेगा ऋण में!

मेघ झमाझम झम-झम बरसे
ऐसा कि धरती न तरसे;
शाम नहीं जब, रात क्या आए
विरहिन का दुख कैसे जाए!
वर्षा है या आग बरसती
पाहन सहे। सहे क्या धरती?

श्यामवर्णी आर्द्रा

तित्तिर पंछी के पंखों-सा उमड़ा बदरा;
गया जेठ आते ही मजीठाई अदरा!
इस पानी से पानी बचेगा किसका-किसका,
पत्थल जैसा काठ कलेजा होगा जिसका।
बिजुरी की छटका लगती है छड़ी-मार हो,
चुन-चुनकर विरहिन को ऐसे कि संहार हो;
राधा एक अकेली घर में, पड़ी काँपती
जितना रहे सचेत, चेत पर क्या रख पाती!

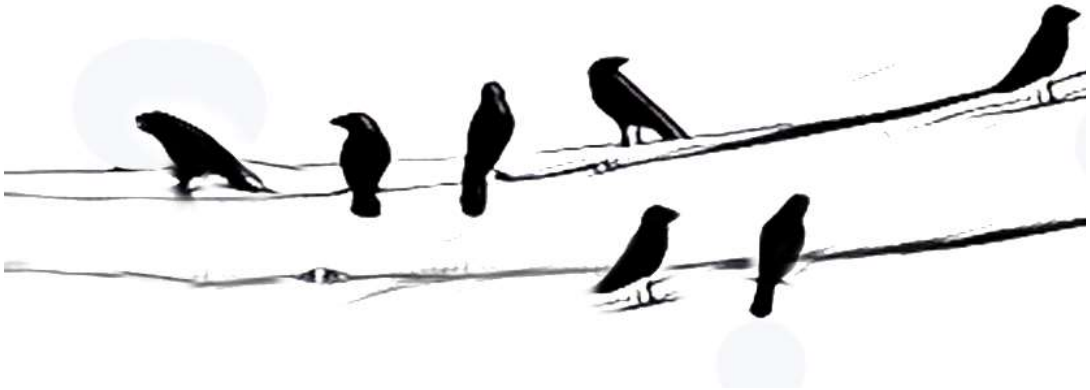

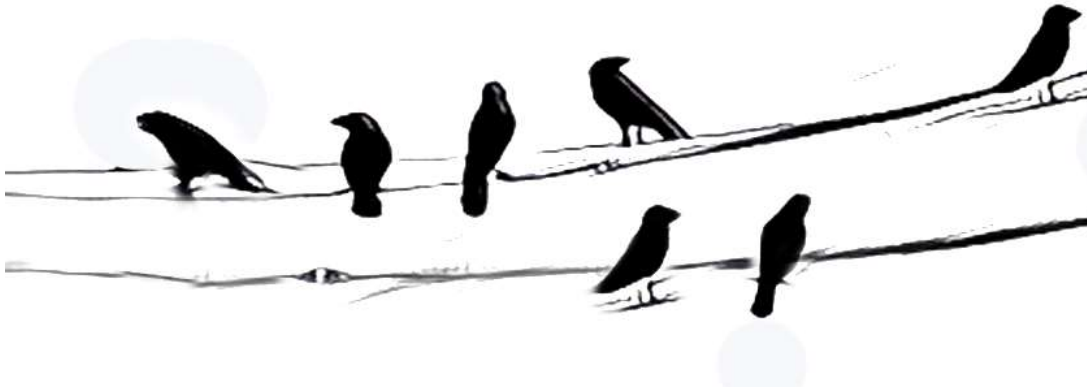

बेमत पावस

खमखम भूत-पिशाच लगे यह बादल झम-झम,
छप्पर पर बूंदों का गिरना—लगता धम-धम।
इस काली रजनी में चुप तो झिंगुर तक है,
प्राण निकल न जाए मेरे, इसका शक है।
चिंगारी ले जैसा घूम रहा है ठनका
दोहरायेगा क्या वैसा ही प्रलय पुरनका!

बादल-बिजली

इधर घुमड़ना, उधर घिटकना बिजुरी घन में,
आखिर क्या उठता है दोनों के ही मन में
कमर कसे जो नाच रहा नटुए के जैसा,
जान गंवायेगा तारों से गिर कर, ऐसा।
एक दिशा में इन्द्रधनुष की ताक-झाँक है,
सूई से साड़ी में कोई गया टाँक है।

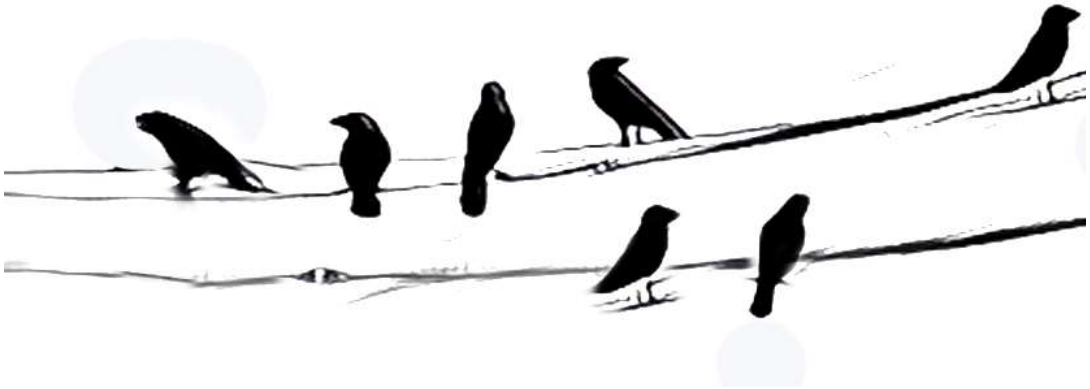

ऐसी यह बरसात

कुदक रहे,
फुदक रहे
आंगन के पानी में,
कैसा तो मस्त बने दादुर ये;
एक ही रट
टर्र-टों, टर्र-टों!
जिसको सुन बादल भी
गरज रहे—गड़गड़-गड़,
गड़गड़-गड़।
काँप-काँप जाती है धरती तक,
क्या होगा? सोचकर
कलेजा धक्!

मेघ-दुकूल

दर्पण जैसा झलमल-झलमल
नदी और हैं, पोखर,
पूजा के आसन-से लगते
मिट्टी के संग पत्थर।

पाट-पितंबर जैसा नभ है
न गर्मी, न शीत,
ऐसे दिवस-काल का दर्शन
पाना प्रियतम-प्रीत!

मन बांधो ! मुझसे हैं बोले
खिले कास के फूल,
उड़ा जा रहा मन है नभ में
जैसे मेघ-दुकूल।

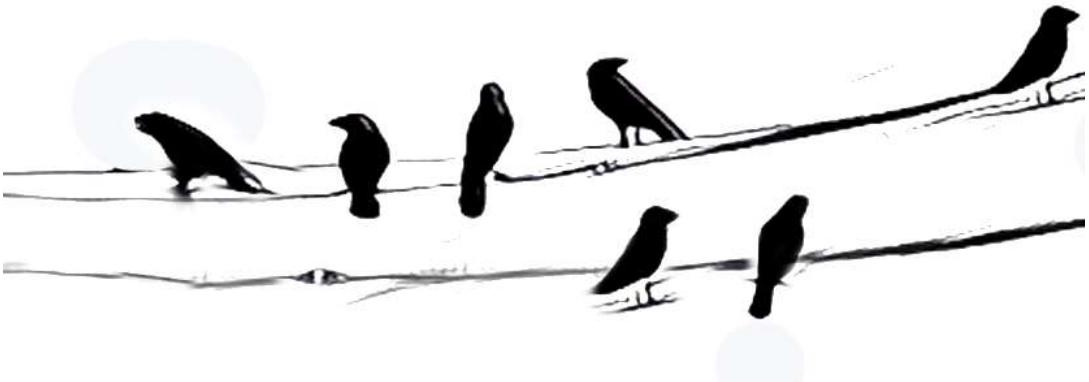

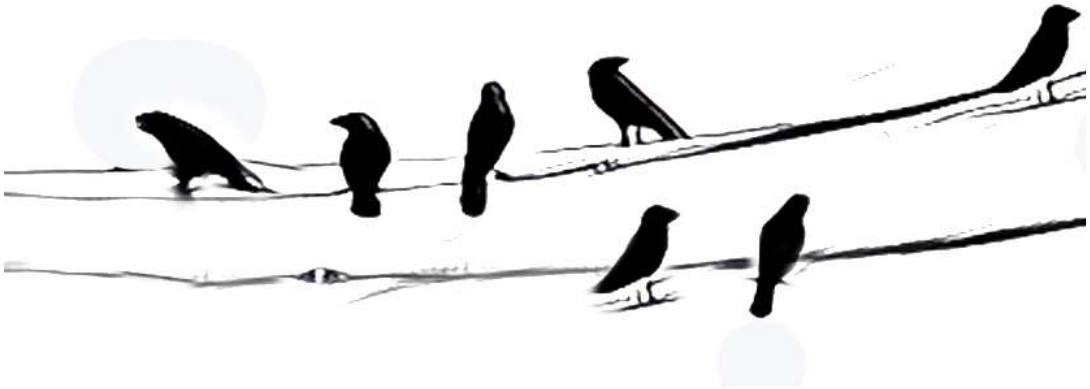

सारंगी के सुर : शरत

बोल रहे टिटही-सारस, तो हंस भी बोले—
क्या सितार, ढोलक, मृदंग, वंशी मन खोले ?
सरिता से लेकर जंगल तक नाद-नाद है
क्या युवकों के बीच कोई गुपचुप समाद है ?
एक साथ कितने ही सुर में सारंगी-धुन
या सातो सुर मिले एक ही सुर में, गुनगुन!

शरत लगे सुहागिन

शरत सखी की हाँक सुनी क्या
हर्षित हरशृंगार;
मौलसिरी पर उमड़ पड़ा है
चंपा का भी प्यार।

पर अपने में मस्त कमल हैं
जैसे मस्त हैं कास,
कहाँ मालती को भी सुध-बुध
भौंरा किसके पास ?

कल तक शरत कुँआरी ही थीं
अब वह लगे सुहागिन,
कहीं किसी के घर हेमंत है
और किसी के, आगिन!

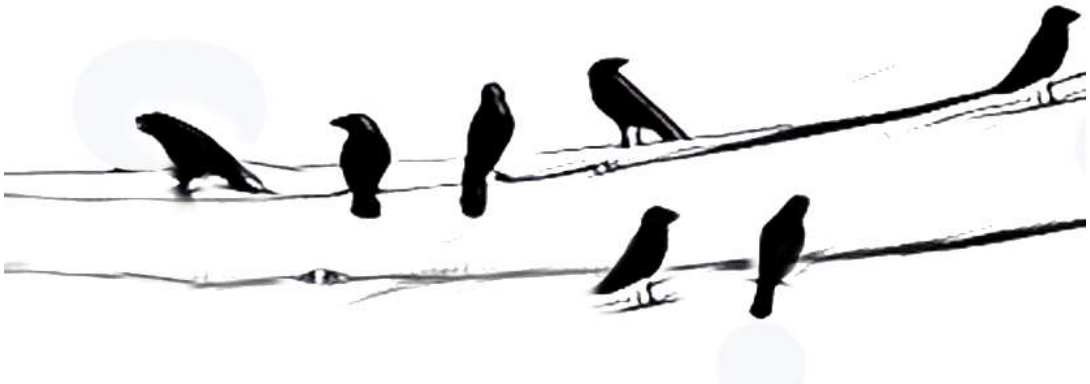

हेमंत

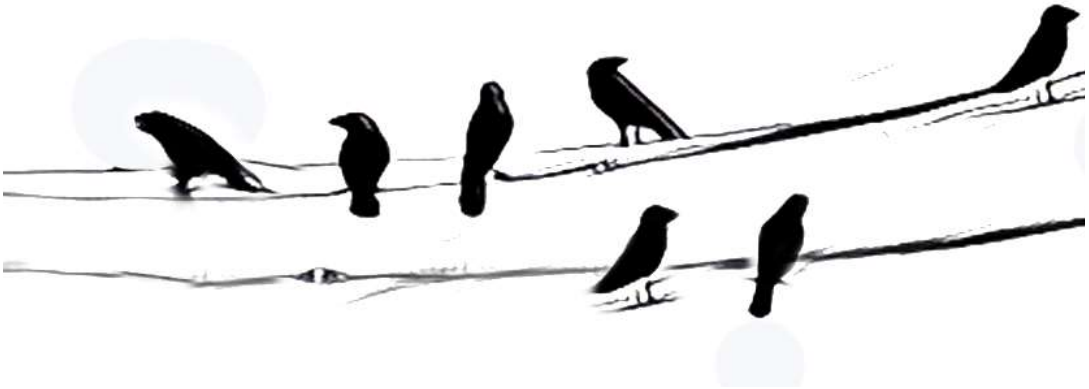

सरसों जैसे दिन

सरसों का तन, सरसों का मन
सरसों जैसा दिन,
अच्छा होता, इस हेमंत को
कहते लोग आश्विन।
साफ-साफ धोई-सी धरती
हरे-भरे हैं खेत,
जहाँ-तहाँ पुष्पित कासों के
झुके हुये हैं बेंत।
रुके-रुके-से सरिता-पोखर
(कल के चंचल) शांत,
किसकी हाँक सुनी जो ऐसे
लौट रहे हैं कांत!

शिशिर का साथी

कोयल भी शांत हुई
कूक न सुनाती अब,
भले हौले-हौले शीत
देह सिहराती अब;
आने को शिशिर भी है
बात ये कँपाती अब,
भले खिली सरसों ये
मन को लुभातीं अब!

शिशिर

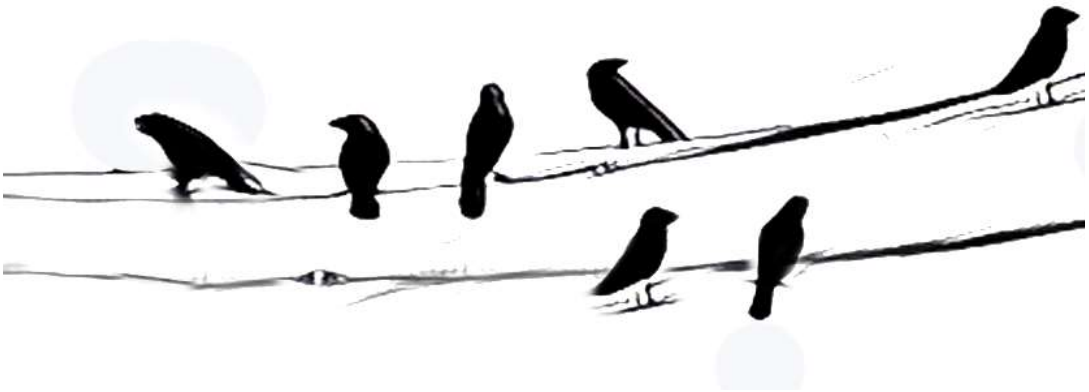

रात हुई सुरसा

झुकी हुई सरसों में
फूल न तो पात ही,
अब न हेमंत की वह
कूक याकि रात ही;
सुरसा-सी रात हुई
करती जो घात ही,
फिर भी न सूर्य साथ
न तो साथी साथ ही।

ओढ़े रजाई शिशिर

शिशिर के आते क्या
सुहाते नदी-पोखर ही ?
शिशिर क्या ? साँढ़ है,
न मानता है डर ही।
बर्फ का गुलेल मारे
सूर्य भी तो तान कर
आग या रजाई बिन
सुख न दे आज घर।

माघ की धूप

शिशिर के ही पहरे में
शितलहरी नाच रही—नंग-धड़ंग,
झाँक रहा
नभ-से है
सहमा-सा सूरज;
फेंक रहा
धूप का है रेशमी वसन।

किधर तो गिराना है
किधर वह गिराता है;
उड-उड़कर कहीं और जाता है।

शिशिर का ठट्ठा

जीवन की ज्यों घोर निराशा—
घोर कुहासा।
कहाँ छिपा है सुख का सूरज,
कहाँ है वासा?
प्राणों की न चहल-पहल है,
चुप्पी का है सट्टा;
कोई रजाई तर में सोया,
कोई तो घूरे के—
निर्गुण का ही ठट्ठा!

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.
जन्म स्थान : भागलपुर
माता का नाम : जीवनलता पूर्वे
पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे
शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), एम. ए. (हिन्दी) एम. एड, पी-एचडी
प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित
सम्पादन : १. गीत-गंगा (अंगिका गीत संग्रह),
२. नवगीतकार मधुसूदन साहा
३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद),
४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा
५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन
६. केकरों चाँद केन्हों चाँद
७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका नाटक)
८. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ
९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य
१०. कर्ण महाकाव्य : संवेदना और रूप-शिल्प
के अलावा 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका)
प्रकाशित पुस्तकें : १. परबतिया (अंगिका उपन्यास)

२. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास)
३. गुलबिया (अंगिका उपन्यास)
४. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास)
५. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह)
६. शिरीष की सुधा (कहानी-संग्रह)
७. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह)
८. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह)
९. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह)
१०. शिशिर की धूप (कविता संग्रह)
११. नमामि गंगे (कविता-संग्रह)
१२. ताँका शतक
१३. मंदोदरी (अंगिका प्रबंध काव्य),
१४. ऋतुरंजन (अंगिका काव्य)

सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)